राजस्थान के किसान आंदोलन

Peasant Movements in Rajasthan

- राजस्थान में किसान आंदोलन के जनक – विजय सिंह पथिक
  Father of Peasant Movement in Rajasthan - Vijay Singh Pathik
- राजस्थान व सम्पूर्ण भारत वर्ष का प्रथम व्यापक व शक्तिशाली किसान आंदोलन–बिजौलिया किसान आंदोलन (मेवाड़)।
  First widespread and powerful Peasant movement in Rajasthan and entire India - Bijolia Peasant Movement (Mewar)

मत्स्य क्षेत्र के किसान आंदोलन

Peasant Movements in Matsya region

अलवर किसान आंदोलन – 1921–1925

Alwar Peasant Movement - 1921-1925

- रियासत – अलवर
  State - Alwar
- राजा – जयसिंह
  King - Jai Singh
- यह आंदोलन राजूपत किसानों द्वारा किया गया।
  This movement was carried out by Rajput farmers.
- नेतृत्व – माधोसिंह, गोविन्द सिंह, अमर सिंह, गंगा सिंह
  Leadership - Madho Singh, Govind Singh, Amar Singh, Ganga Singh
- कारण – 1. महाराजा जयसिंह ने सुअरों को मारने पर प्रतिबंध लगाया। (1921)
  Reasons - Maharaja Jai Singh banned killing of pigs. (1921)
  2. खालसा क्षेत्र में लगान वृद्धि। (1924)
  Increase in tax in Khalsa area. (1924)
- अलवर के नए भूमि बंदोबस्त कानून के तहत राजपूतों व ब्राह्मणों को मिलने वाली रियायतों को समाप्त कर दिया गया।
  Under the new land settlement law of Alwar, the concessions given to Rajputs and Brahmins were abolished.
- जनवरी 1925 – दिल्ली में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के अधिवेशन में अलवर के राजपूत किसानों ने भाग लिया। (राजावत व शेखावत)
  January 1925 - Rajput farmers of Alwar participated in the convention of All India Kshatriya Mahasabha in Delhi. (Rajawat and Shekhawat)
- राजपूत किसानों ने यहाँ 'पुकार' नामक पत्रिका में अपनी समस्या प्रकाशित करवायी।

Rajput farmers published their problems in a magazine called 'Pukar'.

- 1925 – अलवर मे सभा करने व हथियार रखने पर रोक लगाई।
  1925 - Ban was imposed on holding meetings and keeping weapons in Alwar.
- किसान नीमूचाणा में एकत्रित हुए।
  Farmers gathered in Neemuchana.
- स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अलवर के महाराजा जयसिंह ने इस मामले की जाँच हेतु जनरल रामभद्र ओझा की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया।
  Seeing the seriousness of the situation, Maharaja Jai Singh of Alwar appointed a commission under the chairmanship of General Rambhadra Ojha to investigate the matter.
- यह आयोग 7 मई 1925 को नीमूचणा पहुँचा।
  This commission reached Neemuchana on 7 May 1925.
- इस आयोग को यह दायित्व सौंपा गया था कि मामले की गहन जाँच कर समस्या समाधान हेतु सुझाव दें।
  This commission was entrusted with the responsibility to investigate the matter thoroughly and give suggestions for solving the problem.
- लेकिन यह आयोग सार्थक सिद्ध नहीं हुआ।
  But this commission did not prove fruitful.
- महाराजा जयसिंह ने आंदोलन को बलपूर्वक कुचलने का निश्चय किया।
  Maharaja Jai Singh decided to crush the movement by force.

नीमूचाणा हत्याकांड / Neemuchana Massacr :–

- 14 May 1925
- स्थान – नीमूचाणा (बानसूर, कोटपूतली-बहरोड़)
  Place - Neemuchana (Bansur, Kotputli-Bahrod)
- 800 किसान एकत्रित हुए।
  800 farmers gathered.
- कमांडर छज्जु सिंह ने गाँव जलाने व गोलियाँ चलाने के आदेश दिए।
  Commander Chhajju Singh ordered to burn the village and open fire.
    - राजस्थान का डायर
      Dyer of Rajasthan
- 50 लोग व 160 पशु मारे गए। (जाँच आयोग – 95 मरे व 250 घायल)
  50 people and 160 animals were killed. (Inquiry Commission - 95 dead and 250 injured)
- 144 घर जलाए।
  144 houses were burnt.
- रामनारायण चौधरी ने इसे 'नीमूचाणा हत्याकांड' की संज्ञा दी।
  Ramnarayan Chaudhary called it 'Neemuchana Massacre'.

- राजस्थान सेवा संघ ने 31 मई 1925 के तरूण राजस्थान समाचार–पत्र में इस घटना को सचित्र प्रकाशित करवाया।
  Rajasthan Seva Sangh published this incident with pictures in Tarun Rajasthan newspaper of 31 May 1925.
- रियासत समाचार–पत्र (दिल्ली) में इसे जलियाँवाला से भी खतरनाक बताया।
  Riyasat Newspaper (Delhi) described it as more dangerous than Jallianwala.
- महात्मा गांधी ने इसे जलियाँवाला से भी विभत्स बताया और दोहरी डायर शाही की संज्ञा दी।
  Mahatma Gandhi described it as more horrific than Jallianwala and called it double Dyrism.
- Dyrism Double Distilled – पत्र यंग इंडिया में (गाँधी का समाचार पत्र)
  Dyrism Double Distilled – In Young India Newspaper(Gandhi's newspaper)
- राजस्थान सेवा संघ ने जाँच हेतु कन्हैयालाल कलंत्री, लादुराम जोशी व हरीभाई कींकर को नीमूचाणा भेजा।
  Rajasthan Seva Sangh sent Kanhaiyalal Kalantri, Ladu Ram Joshi and Haribhai Kinkar to Neemuchana for investigation.
- राष्ट्रीय स्तर पर मणिलाल कोठारी की अध्यक्षता में एक जाँच आयोग बना। (सचिव–रामनारायण चौधरी)
  An investigation commission was formed at the national level under the chairmanship of Mani Lal Kothari. (Secretary- Ram Narayan Chaudhary)
- इस हत्याकांड की जाँच हेतु अलवर महाराजा ने जनरल छज्जु सिंह की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया जिसमें लाला रामचरण और सिविल जज तथा नाहरपुर के ठाकुर सुल्तान सिंह को इसका सदस्य बनाया।
  To investigate this murder, Alwar Maharaja appointed a commission under the chairmanship of General Chhajju Singh in which Lala Ramcharan and civil judge and Thakur Sultan Singh of Naharpur were made its members.
- 18 नवम्बर 1925 को पुरानी लाग–बाग का पुनः आदेश निकाला।
  On 18 November 1925, the order of Old Lag-Bagh was issued again.
- इस हत्याकांड के विरोध में बम्बई के मारवाड़ी विद्यालय में 18 जून 1925 को वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा की गई तथा निन्दा प्रस्ताव पारित किया गया।
  In protest against this massacre, a public meeting was held in the Marwari School of Bombay on 18 June 1925 under the chairmanship of Vallabhbhai Patel and a condemnation resolution was passed.
- नीमूचणा काण्ड में 39 लोगों को गिरफ्तार किया गया।
  39 people were arrested in the Neemuchana case.
- अलवर जेल के सुपरिटेन्डेन्ट पंडित हरबख्श को गिरफ्तार लोगों के मुकदमें की सुनवाई के लिए स्पेशल जज नियुक्त किया गया।
  Pandit Harbakhsh, Superintendent of Alwar Jail was appointed as Special Judge to hear the case of the arrested people.

नोट :– नीमूचाणा हत्याकाण्ड को भारत का दूसरा जलियाँवाला हत्याकांड माना जा सकता है।

Note:- Neemuchana massacre can be considered as the second Jallianwala massacre of India.

- नीमूचाणा के किसान रघुनाथ की पुत्री 'सीता देवी' की अलवर किसान आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।
  Neemuchana farmer Raghunath's daughter 'Sita Devi' played an important role in the Alwar Kisan Andolan.
- बी.एफ. भरुचा (राष्ट्रीय स्तर के नेता) ने अलवर महाराजा को प्रतिदिन प्रातःकाल रूसी क्रान्ति याद करने की सलाह दी।
  B.F. Bharucha (National level leader) advised Alwar Maharaja to remember the Russian Revolution every morning.

➢ मेव किसान आंदोलन (1932–1934) –

Meo Peasant Andolan (1932-1934) -

- क्षेत्र – अलवर व भरतपुर रियासतों का मेव बहुल क्षेत्र
  Region - Meo dominated area of Alwar and Bharatpur princely states
- कारण – अधिक लगान एवं धार्मिक कारण
  Reason - High tax and religious reasons
- नेतृत्व – 1. यासीन खान मेव (गुड़गाँव)
  Leadership - 1. Yasin Khan Meo (Gurgaon)
  - इनकी सलाह पर मेवों ने खरीफ फसल का लगान देना बंद कर दिया।
    On his advice, Meos stopped paying tax for Kharif crop.
  2. मोहम्मद हादी (अलवर) – 1932 अन्जुमन खादिम–उल–इस्लाम की स्थापना की।
     Mohammad Hadi (Alwar) - 1932 founded Anjuman Khadim-ul-Islam.
     - मुसलमानों के हितार्थ की साम्प्रदायिक संस्था
       Communal organization for the benefit of Muslims
     - इस संस्था पर अलवर में रोक लगी।
       This organization was banned in Alwar.
  3. गुलाम–भीक–नारंग (अम्बाला) –
     Ghulam-Bhik-Narang (Ambala) -

  नोट :– इन तीनों ने मिलकर कॉन्सिल ऑफ एक्शन बनाई।
  Note:- These three together formed the Council of Action.

➢ 12 दिसंबर 1932 को अलवर महाराजा ने किसानों की शिकायतों का पता लगाने के लिए एक जाँच समिति नियुक्त की।
On 12 December 1932, Alwar Maharaja appointed an enquiry committee to find out the grievances of the farmers.

- अध्यक्ष – राजा दुर्जनसिंह
  Chairman - Raja Durjan Singh
- सदस्य – राजा गजनाफर अली, गणेशीलाल

Members - Raja Gajnafar Ali, Ganeshilal

- गुडगाँव के मेव नेता यासिन खान की सलाह पर मेव किसानों ने इस समिति का बहिष्कार किया।
  On the advice of Gurgaon's Meo leader Yasin Khan, the Meo farmers boycotted this committee.

➢ 1932 – अलवर राज्य ने Registration of Society Act लागू किया।
1932 - Alwar state implemented the Registration of Society Act.

- इस एक्ट के तहत समस्त धार्मिक व गैर धार्मिक संस्थाओं का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य था।
  Under this act, registration of all religious and non-religious institutions was compulsory.
- अर्थात् राज्य की अनुमति के बिना कोई संस्था खुल नहीं सकती।
  That is, no institution can be opened without the permission of the state.
- मेवों ने इस एक्ट का विरोध किया।
  Meos opposed this act.

➢ 1933 – तिजारा (खैरथल–तिजारा) में साम्प्रदायिक दंगे हुए।
1933 - Communal riots took place in Tijara (Khairthal-Tijara).

- चंद्रप्रभु का मंदिर।/ Chandraprabhu temple.

➢ मेवों ने हिन्दुओं के घर जला दिये। हिन्दू भागकर मथुरा, भरतपुर आदि दूसरे स्थानों पर चले गए।
The Meos burnt the houses of Hindus. Hindus fled to other places like Mathura, Bharatpur etc.

➢ कमाण्डर ब्रिगेडियर जे.एच.एफ. लाकिन को स्थिति पर नियंत्रण करने भेजा।
Commander Brigadier J.H.F. Lakin was sent to control the situation.

➢ अंग्रेजों ने इन दंगों का दोषी महाराजा जयसिंह को मानकर उन्हें राज्य से निष्काषित कर दिया।
The British held Maharaja Jaisingh guilty of these riots and expelled him from the state.

➢ महाराजा जयसिंह पेरिस चले गए।
Maharaja Jaisingh went to Paris.

➢ अंग्रेज 'वाइली' को अलवर का प्रधानमंत्री बनाया गया।(लोथियन के स्थान पर)
Englishman 'Wylie' was made the Prime Minister of Alwar. (In place of Lothian)

➢ इबटसन को राजस्व मंत्री बनाया गया।
Ibbotson was made the Revenue Minister.

➢ 1933 में अलवर में कुछ लगान समाप्त किए गए।
In 1933 some taxes were abolished in Alwar.

- हुण्डाबाड़ा, खादकुड़ा, पड़ाव, ताईबाजरी
  Hundabada, Khadkudra, Padav, Taibajri

➢ मेवों को संतुष्ट करने के लिए एक मुस्लिम सदस्य को राज्य कॉन्सिल में शामिल किया गया।
To satisfy the Meos a Muslim member was included in the State Council.

- खान बहादुर काजी अजीजुद्दीन बिलग्रामी।
  Khan Bahadur Qazi Azizuddin Bilgrami.

➢ **अलवर प्रजामंडल के नेतृत्व में किसान आंदोलन –** 1941–1947 ई.

Peasant movement under the leadership of Alwar Praja Mandal - 1941-1947 A.D.

- उस समय अलवर के शासक तेजसिंह थे।
  At that time, the ruler of Alwar was Tej Singh.
- अलवर राज्य प्रजामंडल ने सबसे पहले जागीरी समस्या को अपने हाथ में लिया। अलवर राज्य में उस समय तक जागीरी गाँवों में भूमि बंदोबस्त नहीं हो रखा था और जागीरदार, बिस्वेदार, माफीदार अपने किसानों से मनमाना लगान, लाग–बाग ओर बेगार लेते थे। जिससे किसानों की हालत दयनीय बनी हुई थी।
  Alwar Rajya Praja Mandal first took the Jagir problem in its hands. Till that time, there was no land settlement in Jagir villages in Alwar state and Jagirdar, Biswedar, Mafidar used to take arbitrary taxes and forced labour from their farmers. Due to which the condition of the farmers remained pitiable.
- 1 व 2 अप्रैल, 1941 को अलवर राज्य प्रजामंडल के अध्यक्ष शोभाराम ने राजगढ़ में 'जागीर माफी प्रजा कांफ्रेंस' का आयोजन किया।
  On 1 and 2 April, 1941, Shobharam, the president of Alwar Rajya Praja Mandal, organized the 'Jagir Mafi Praja Conference' in Rajgarh.
- इस कांफ्रेंस का उद्घाटन श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने किया।
  This conference was inaugurated by Shri Satyadev Vidyalankar.
- प्रजामंडल द्वारा आयोजित उपरोक्त कांफ्रेंस के उल्टे ही परिणाम निकले। छोटे जागीरदार व माफीदारों ने अपने किसानों को जोतों से बेदखल कर दिया तथा उन्होंने या तो अपनी भूमि पर खेती का प्रबंध स्वयं किया अथवा खाली छोड़ दी गई थी।
  The above conference organized by Praja Mandal had opposite results. Small Jagirdars and Mafidars evicted their farmers from their holdings and they either arranged for farming on their land themselves or it was left vacant.
- 2 फरवरी, 1946 को प्रजामंडल ने इसी संदर्भ में राजगढ़ तहसील के खेड़ा मंगलसिंह नामक गाँव में एक सभा आयोजित की।
  On 2 February, 1946, Prajamandal organized a meeting in this context in a village named Kheda Mangal Singh of Rajgarh tehsil.
- 8 फरवरी, 1946 को प्रजामंडल ने सम्पूर्ण राज्य में 'दमन विरोधी दिवस' मनाया।
  On 8 February, 1946, Prajamandal celebrated 'Anti-Repression Day' in the entire state.
- जयनारायण व्यास को इस मामले की जाँच हेतु नियुक्त किया गया था। अंत में हीरालाल शास्त्री की मध्यस्थता में प्रजामंडल और महाराजा के बीच समझौता हुआ जिसके फलस्वरूप 10 फरवरी, 1946 को आंदोलनकारी रिहा कर दिए गए।
  Jayanarayan Vyas was appointed to investigate this matter. Finally, an agreement was reached between Prajamandal and the Maharaja under the mediation of Hiralal Shastri, as a result of which the agitators were released on 10 February, 1946.

- **करौली किसान आंदोलन – 1927**
  Karauli Kisan Andolan - 1927
  - नेतृत्व – कुँवर मदन सिंह
    Leadership - Kunwar Madan Singh
- **भरतपुर किसान आंदोलन – 1931**
  Bharatpur Kisan Andolan - 1931
  - नेतृत्व – भोज लम्बरदार
    Leadership - Bhoj Lambardar